(४)

विचार - अरस्तू ने विचार के अंतर्गत बुद्धितत्त्व और भावतत्त्व दोनो को रखा है। यदि त्रासदी में कोई वक्ता अपने चिंतन को प्रस्तुत करता है तो वह तर्क के द्वारा पुष्ट होनी चाहिए तथा उसे व्यक्त करनेवाली भाषा भी विशिष्ट होनी चाहिए। यह तो बुद्धितत्त्व हुआ। भावतत्त्व में यह करुणा, त्रास, क्रोध आदि की व्यंजना करे और उनका मुल्यांकन भी करे तो उसे श्रेष्ठ माना जाना चाहिए।

पदविन्यास — पदविन्यास का अर्थ है शब्दों द्वारा अर्थ की अभिव्यक्ति। जिस प्रकार त्रासदी के कथानक और चरित्र यथार्थ जीवन से लिये जाने के बावजूद विशिष्ट होते हैं उसी प्रकार लेखक की भाषा प्रचलित भाषा होने के साथ-साथ विशिष्ट होनी चाहिए। वह अलंकृत होनी चाहिए। वह त्रासदी के विचारों को वहन (ढोने) करने के साथ-साथ उसे अच्छी तरह से अभिव्यक्त भी करे तभी उसकी सार्थकता है।

दृश्य विधान - अरस्तू ने रंगमंचीय साधनों को अनिवार्य नहीं माना है फिर भी वे यह मानते हैं कि यदि रंगमंचीय प्रस्तुति होती है तो उसका कुशल प्रयोग होना चाहिए। त्रासदी में वर्णित कार्य व्यापारों को रंगमंच पर दिखाया जा सकता है।

गीत - अरस्तू ने त्रासदी अथवा साहित्य के अन्य अंगो कामदी, महाकाव्य आदि में समूह गान (कोरस) को बहुत महत्त्व दिया है। उसके अनुसार त्रासदी में यह गायन एक पात्र की तरह महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।

अरस्तू ने त्रासदी को महाकाव्य से श्रेष्ठ माना है। इसका कारण वे यह बताते हैं कि महाकाव्य में एक मुख्य कथा के साथ साथ कई अवांतर कथायें भी जुड़ी रहती हैं इसलिए उसकी कथा और प्रभाव में बिखराव आ जाता है। इसके विपरीत त्रासदी का कथाफलक संक्षिप्त एवं सुगठित होता है। त्रासदी की भाँति कामदी भी एक नाट्य विधा है पर उसमें जिस यथार्थ का चित्रण होता है वह त्रासदी से नीचे के स्तर का होता है। इसीलिए अरस्तू ने सभी विधाओं में त्रासदी को सर्वोच्च स्थान दिया है। पाश्चात्य आलोचना के अन्य मुख्य काव्यशास्त्रियों के विचारों को भी आगे के दिनों में इ-कन्टेन्ट के रूप में आप तक पहुँचाया जायेगा।

[signature]

mobile No. 9431881251

अलंकारों के वे विविध प्रकार, विभिन्न भागों में पाये जाते हैं। यह अनुकरण करुणा और भय के संचार से मनोवेगों को उत्तेजित कर उनका उचित विरेचन करता है।"
इस परिभाषा के आधार पर हम त्रासदी की प्रमुखतः निम्न विशेषताओं को समझ सकते हैं-

- त्रासदी 'कार्य की अनुकृति' है।
- इसमें वर्णित कार्य गंभीर होता है, स्वतः पूर्ण होता है। वह अपने आप में पूर्ण होता है। पूर्णता के लिये उसे किसी अन्य तत्त्व पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।
- इसमें कथा लेखक के द्वारा वर्णित नहीं की जाती बल्कि कार्य व्यापार के द्वारा प्रस्तुत की जाती है।
- इस कार्य व्यापार को वर्णित करने में भाषा की प्रमुख भूमिका होती है।
- इस वर्णन के द्वारा करुणा और त्रास का उद्रेक होता है जिससे भावों का विरेचन होता है। जैसे राम वनगमन का प्रसंग पढ़कर या देखकर लोग दशरथ के प्रति करुणा से भर जाते हैं और राम की त्रासदी को महसूस करते हैं। जिसका राज्याभिषेक होनेवाला हो उसे वनवास मिले और वह भी 14 वर्षों का, यह त्रासदी पाठकों के मन में त्रास को उत्तेजित कर भावुक बनाती है। कुछ दर्शक तो रो भी देते हैं।

अरस्तू ने त्रासदी (पर आधारित काव्य/नाटक/महाकाव्य) के छः तत्त्व माने हैं -

1. कथानक
2. चरित्र
3. विचार
4. पद विन्यास
5. दृश्य-विधान और-
6. गीत

(i) कथानक - अरस्तू ने त्रासदी में सर्वाधिक महत्त्व कथानक को दिया है। चूँकि अरस्तू की दृष्टि वस्तुपरक थी इसलिए संसार और उसमें घटनेवाली घटनाओं के प्रति उनका झुकाव स्वाभाविक था। त्रासदी कार्य की अनुकृति है और कथानक में उसी कार्य-व्यापार का प्रस्तुतीकरण होता है। यह व्यक्ति चरित्र का नहीं वरन् जीवन में जो सुख : दुख के प्रसंगों से युक्त घटनायें घटती हैं उनका अंकन करता है। जैसा कि पाठ के पहले भाग में बताया जा चुका है - कथानक - ऐतिहासिक, दंतकथामूलक तथा कल्पनामूलक हो सकते हैं।

(2) चरित्र-चित्रण - अरस्तू ने कार्य व्यापार के पश्चात चरित्र चित्रण पर बल दिया है क्योंकि त्रासदी के सारे कार्य को चरित्र ही निष्पादित करते हैं। चरित्रों के अंकन के समय लेखकों को ध्यान रखना चाहिए कि -

- चरित्र भद्र होना चाहिए जिसके माध्यम से नैतिक उद्देश्य की अभिव्यक्ति हो।
- चरित्रों का अंकन ऐसा होना चाहिए कि उसमें औचित्य का निर्वाह हो। उसमें विसंगति या परस्पर विरोधी विशेषतायें दृष्टिगोचर न होती हों।
- चरित्रों में स्वाभाविकता होनी चाहिए। अर्थात जीवन के यथार्थ से उनका मेल हो। चरित्रों में आनेवाले परिवर्तन सहसा न होकर उनके मूल चरित्र पर आधारित होने चाहिए।

विचार किया है। उनके अनुसार अनुकरण मानव स्वभाव की मूल प्रवृत्ति है। अनुकरण के सहारे ही मनुष्य संसार का ज्ञान हासिल करता है। काव्य के संदर्भ में यह अनुकरण तीन रूपों में हो सकता है :

1. प्रतीयमान - अर्थात् वस्तुएँ वास्तव में जैसी हैं या दिखाई देती हैं। इसके अंतर्गत किसी दृश्य का ज्यों का त्यों चित्रण (पेन्टिंग) या वर्णन (स्वभावोक्ति अलंकार) आदि आते हैं।

(2.) संभाव्य - अर्थात् वस्तुएँ वैसी हैं नहीं, मगर हो सकती हैं। जैसे आतिथ्य में वृक्षों के कटते रहने के कारण मनुष्यों को आक्सीजन मास्क पहन कर घूमते रहने का चित्रण या वर्णन

(3) आदर्श - अर्थात् वस्तुओं को जैसा होना चाहिए, उसका चित्रण। जैसे - तुलसीदास द्वारा 'रामचरितमानस' में रामराज्य का चित्रण/वर्णन।

अरस्तू यह मानते हैं कि काव्य या कला प्रकृति की अनुकृति है, पर एकदम नकल न होकर उसका पुनः प्रस्तुतिकरण है। अतः काव्य या कला में उतरा हुआ प्रकृति का रूप, वास्तविक रूप की कमी को दूर कर उसे अधिक पूर्ण रूप प्रदान करता है। प्लेटो यह मानते थे कि कला का आदर्शवादी रूप ही ग्राह्य है। जबकि अरस्तू इसके तीनों रूपों को श्रेष्ठ मानते हैं। अरस्तू ने कथानक के तीन प्रकार माने हैं - ऐतिहासिक, मिथ (देवकथामूलक) और कल्पित। ऐतिहासिक और देवकथामूलक - कथानकों की सामग्री रचनाकार बाह्य जगत से ले सकता है। महाराणा प्रताप के शौर्य का वर्णन इतिहास से लिया गया कथानक है तथा देवकथामूलक कथाओं में पौराणिक कहानियाँ आती हैं। कल्पित रचनाओं में अपार संभावनायें हैं। इनमें वैज्ञानिक आविष्कारों से जुड़ी कहानियों तथा अंतरिक्ष से आये प्राणियों की कहानियाँ हैं। अरस्तू ऐतिहासिक धारणाओं से अधिक आदर्श काव्य को श्रेष्ठ मानते हैं क्योंकि इतिहास केवल उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करता है जो घटित हो चुकी है जबकि साहित्य संभावित तथा आदर्श स्थितियों का भी अंकन करता है। इतिहास में घटित हो चुकी घटनाओं की चर्चा होती है और यही उसके विषय वस्तु को सीमित करती है। काव्य का सत्य घटना विशेष तक सीमित न रहकर 'सामान्य' रहता है। इसके अंतर्गत विषय का विस्तार संभव है। इतिहास वस्तुपरक होता है जबकि काव्य-रचना में अनुभूति तथा विचार का आश्रय लिया जाता है। श्रेष्ठ काव्य में दर्शन तत्व की प्रधानता होती है।

त्रासदी (Tragedy) - अरस्तू का यह सर्वाधिक चर्चित सिद्धांत रहा है। अरस्तू ने ट्रेजिडी की परिभाषा देते हुए कहा है कि - 'ट्रेजेडी एक ऐसे कार्य का अनुकरण है जो गंभीर है, स्वतः पूर्ण है और जिसका एक निश्चित आयाम है। यह अनुकरण एक ऐसी भाषा में होता है जो कलात्मक अलंकारों से हर प्रकार से सुसज्जित रहती है। कलात्मक

Dr Karuna Roy
Associate Professor
Department of Hindi
S.G.G.S. College
Patna City
Email- karuna–1812@yahoo.co.in

स्नातक खण्ड - III
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष
पत्र - 6
इकाई - 4

अरस्तू के काव्यशास्त्रीय सिद्धांत

पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अध्ययन के क्रम में आपलोगों ने प्लेटो के काव्य सिद्धांतों के बारे में पढ़ा भी है और ई-कंटेन्ट के माध्यम से इसे दुहराया भी है। इस ई-कंटेन्ट में आप लोग उनके शिष्य अरस्तू के काव्य सिद्धांत के बारे में कक्षा में पढ़ाये गये पाठ का पुनर्पाठ करेंगे। जैसा कि आपको कक्षा में बताया जा चुका है अरस्तू के काव्य सिद्धांतों में अनुकरण सिद्धांत और विरेचन सिद्धांत प्रमुख हैं। अनुकरण सिद्धांत एक तरह से प्लेटो के काव्य सिद्धांत में जो अनुकरण को निकृष्ट बताया गया था, उसी का उत्तर है। और, विरेचन सिद्धांत उनका त्रासदी (Tragedy) का सिद्धांत है। विरेचन शब्द आपको नया लग सकता है किन्तु यह शब्द नया नहीं है। यह वैद्यक (आयुर्वेद) की भाषा है। इसमें यह शब्द इलाज की एक पद्धति को दर्शाता है जिसमें शरीर के कुप्रभावों को दूर करने के लिए ऐसी दवा दी जाती थी जो उसके लक्षणों को और बढ़ाकर फिर कम कर देती थी। जैसे बुखार से तप्त शरीर को कंबल ओढ़ाकर और गर्मी बढ़ाकर पसीना उत्पन्न किया जाय जिससे कि बुखार उतर जाए।

अरस्तू का जन्म 384 ईसा पूर्व मकदूनिया में हुआ था। वे प्लेटो के शिष्य थे। वे प्रसिद्ध विजेता सिकन्दर के गुरु भी थे। उनके साहित्य-संबंधी विचार 'काव्यशास्त्र' (Poetics) एवं भाषण-शास्त्र (Rhetorics) में उपलब्ध होते हैं। उन्होंने तर्कशास्त्र का भी अध्ययन किया था। अरस्तू के महत्त्वपूर्ण काव्य सिद्धांत त्रासदी के विवेचन क्रम में विकसित हुए हैं। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ पोएटिक्स में उन्होंने ट्रेजेडी एपिक और कामेडी की चर्चा को अनुकरणात्मक माना है। इन सभी रूपों में त्रासदी (ट्रेजेडी) को उन्होंने सर्वाधिक महत्व दिया है। त्रासदी के प्रयोजन के रूप में उन्होंने विरेचन सिद्धान्त की चर्चा की है। उनके द्वारा प्रतिपादित काव्य सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने मानव-मनोविज्ञान और अंतःप्रकृति को दृष्टि में रखकर अपनी स्थापनायें प्रस्तुत की हैं। अब आगे उनके दोनों सिद्धांतों की चर्चा की जाएगी

(1) अनुकरण सिद्धांत (Theory of Imitation)

(2) विरेचन सिद्धांत (Theory of catharsis)

<u>अनुकरण सिद्धांत</u> - प्लेटो ने काव्य को जीवन का अनुकरण मानते हुए इस क्रिया के लिए ग्रीक शब्द 'मीमेसिस' का प्रयोग किया था। जिसका अंग्रेजी अनुवाद 'इमीटेशन' हुआ। हिन्दी में इसे अनुकरण कहा जाता है। अरस्तू ने सौंदर्यशास्त्री की दृष्टि से इस सिद्धांत पर